Roll No. : ..... Total Pages : 4

# 5643-B

## M.A. (Final) Examination, 2016

## SANSKRIT LITERATURE

Paper – III(B)

(Sankhya Evam Yoga Darshan)

*Time : Three Hours*

*Maximum Marks : 100*

(खण्ड–अ) [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड–ब) [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(खण्ड–स) [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

### खण्ड–अ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

**(इकाई–I)**

(i) सांख्यदर्शन के अनुसार त्रिविध दु:ख का नामोल्लेख कीजिए।

(ii) सांख्य के अनुसार 'षोडकशस्तु विकार:' को स्पष्ट कीजिए।

**(इकाई–II)**

(iii) सांख्यदर्शन के आधार पर त्रिविध गुणों का स्वरूप प्रतिपादित कीजिए।

(iv) पुरुष की सत्ता की सिद्धि में दिये गए प्रमाणों का उल्लेख कीजिए।

**(इकाई–III)**

(v) सांख्यदर्शन के अनुसार बुद्धि के स्वरूप व इनके सात्त्विक रूप का प्रतिपादन कीजिए।

(vi) सांख्यदर्शन सम्मत इन्द्रियों की उत्पत्ति के कारण तथा इन्द्रियों के कार्यों का उल्लेख कीजिए।

**(इकाई–IV)**

(vii) 'अभ्यासवैरागाभ्यां तन्निरोधः' को स्पष्ट कीजिए।

(viii) योगदर्शन के अनुसार 'विपर्यय' का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

**(इकाई–V)**

(ix) योगदर्शन के अनुसार 'यम' का सभेद निरूपण कीजिए।

(x) योगदर्शन के अनुसार 'प्रत्याहार' का लक्षण लिखिए।

## खण्ड–ब

**(इकाई–I)**

अधोलिखित कारिका की व्याख्या कीजिए :

2. प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम्।
तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्रवचनं तु।।

3. सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात् कार्यतस्तदुपलब्धेः।
महदादि तच्च कार्यं प्रकृतिसरूपं विरूपं च।।

**(इकाई–II)**

4. त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनम्प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तया च पुमान्।।

5. तस्मान्तत्संयोगादचेतनं चेतनावदिव लिङ्गम।
गुणकर्तृत्वेऽपि तया कर्तेव भवत्युदासीनः।।

**(इकाई–III)**

अधोलिखित कारिका की संस्कृत में व्याख्या कीजिए :

6. अभिमानोऽहङ्कारस्तस्माद् द्विविधः प्रवर्त्तते सर्गः।
एकादशकश्च गणस्तान्मात्रः पञ्चकश्चैव।।

7. प्रकृतेर्महांस्ततोऽहंकारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात्पञ्चभ्यः पञ्च भूतानि।।

**(इकाई–IV)**

निम्नलिखित सूत्र की भोजवृत्ति के आलोक में व्याख्या कीजिए :

8. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।

9. तस्य वाचकः प्रणवः।

**(इकाई–V)**

**10.** अविद्याडस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।

**11.** शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।

## खण्ड–स

**(इकाई–I)**

**12.** सांख्यदर्शन के अनुसार सत्कार्यवाद की सिद्धि कीजिए।

**(इकाई–II)**

**13.** सांख्यदर्शन के अनुसार प्रकृति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी सत्ता की सिद्धि में प्रमाण प्रस्तुत कीजिए।

**(इकाई–III)**

**14.** योगदर्शन के अनुसार अष्टांग योग का निरूपण कीजिए।

**(इकाई–IV)**

**15.** योगदर्शन के अनुसार ईश्वर का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।